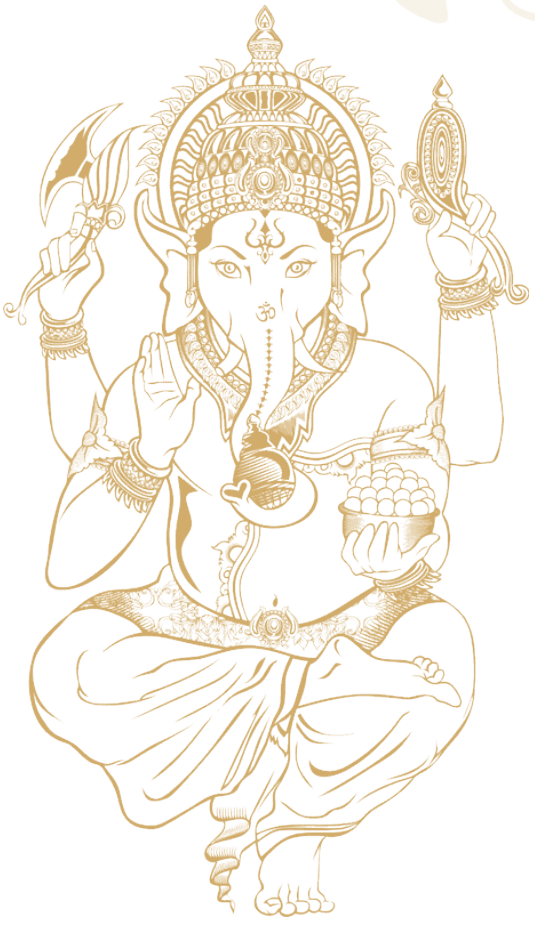

Piyush

Vrindaa Joshi

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121631501

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121631501 Date: 18/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24-25/02/1997	जन्म तिथि	07/07/2001
सोम-मंगलवार	दिन	शनिवार
घंटे 03:30:00	जन्म समय	18:48:00 घंटे
घटी 51:35:45	जन्म समय(घटी)	33:16:42 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Nagpur
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	21:10:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	79:12:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:13:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:51:42	सूर्योदय	05:37:11
18:18:05	सूर्यास्त	18:58:48
23:49:03	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:25

धनु	लग्न	धनु
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
कन्या	राशि	मकर
बुध	राशि-स्वामी	शनि
उ०फाल्गुनी	नक्षत्र	श्रवण
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
4	चरण	1
शूल	योग	विष्कुम्भ
वणिज	करण	गर
पी-पीयूष	जन्म नामाक्षर	खी-खिली
मीन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
वैश्य	वर्ण	वैश्य
मानव	वश्य	जलचर
गौ	योनि	वानर
मनुष्य	गण	देव
आद्य	नाड़ी	अन्त्य
मूषक	वर्ग	मार्जार

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 0वर्ष 2मा 25दि		13:58:23	धनु	लग्न	धनु	19:52:51	चन्द्र 7वर्ष 9मा 5दि	
राहु		12:31:24	कुंभ	सूर्य	मिथु	21:36:37	राहु	
22/05/2014		09:28:28	कन्या	चंद्र	मक	12:58:51	12/04/2016	
22/05/2032		09:49:01	कन्या व	मंगल व	वृश्चि	22:18:12	13/04/2034	
राहु	01/02/2017	00:38:02	कुंभ	बुध	मिथु	00:54:36	राहु	24/12/2018
गुरु	28/06/2019	14:05:18	मक	गुरु	मिथु	04:54:29	गुरु	19/05/2021
शनि	04/05/2022	03:22:14	कुंभ	शुक्र	वृष	08:08:43	शनि	25/03/2024
बुध	20/11/2024	12:17:20	मीन	शनि	वृष	15:49:52	बुध	12/10/2026
केतु	09/12/2025	04:55:04	कन्या	राहु व	मिथु	12:29:52	केतु	31/10/2027
शुक्र	09/12/2028	04:55:04	मीन	केतु व	धनु	12:29:52	शुक्र	30/10/2030
सूर्य	02/11/2029	12:35:10	मक	हर्ष व	कुंभ	00:23:12	सूर्य	24/09/2031
चन्द्र	04/05/2031	05:00:31	मक	नेप व	मक	14:06:35	चन्द्र	25/03/2033
मंगल	22/05/2032	11:44:43	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	19:13:01	मंगल	13/04/2034

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:03 चित्रपक्षीय अयनांश 23:52:25

लग्न-चलित

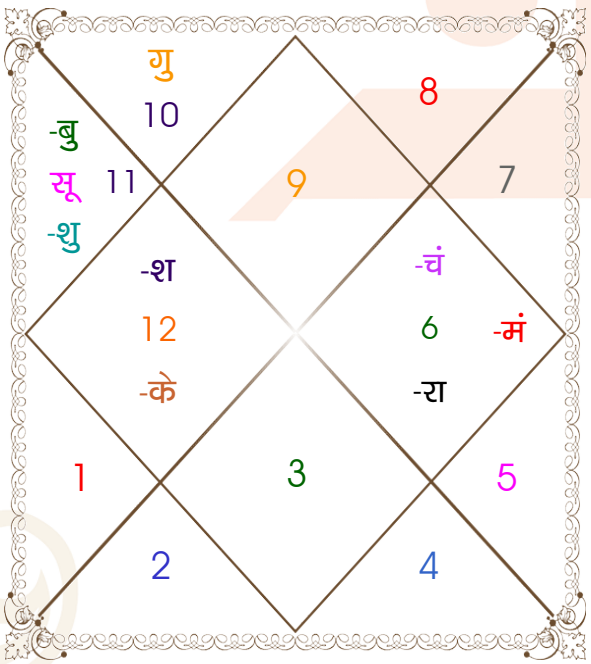

लग्न-चलित

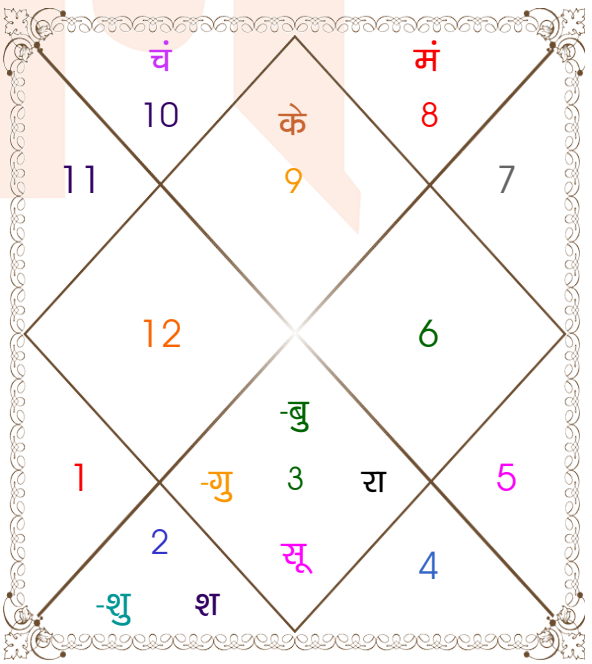

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गौ	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	शनि	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	कन्या	मकर	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.00		

कुल : **24 / 36**

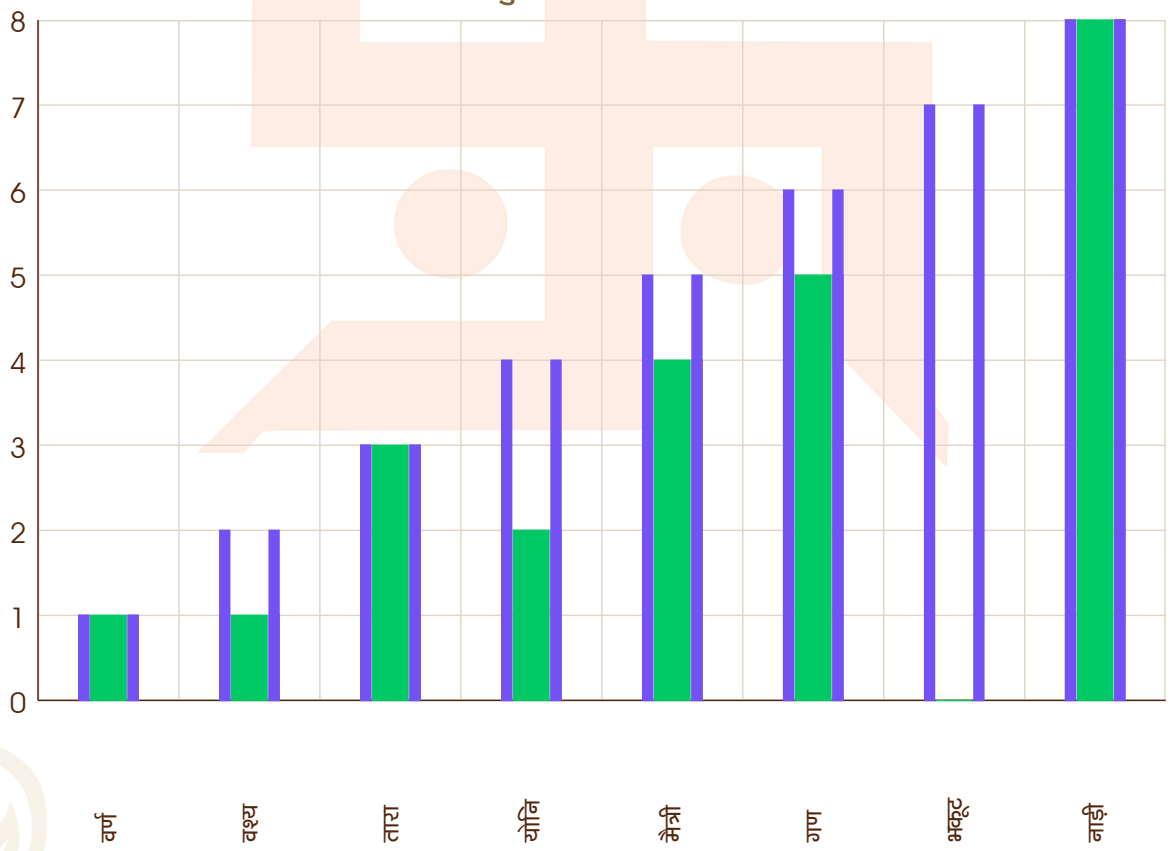

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

च्पलर्नी का वर्ग मूषक है तथा टतपदकं श्रवेीप का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार च्पलर्नी और टतपदकं श्रवेीप का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

च्पलर्नी मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

टतपदकं श्रवेीप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल टतपदकं श्रवेीप कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्ष्;थ्ङम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र1द्धझ क्योंकि मंगल टतपदकं श्रवेीप कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

च्पलर्नी तथा टतपदकं श्रवेीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

च्पलनेी का वर्ण वैश्य है तथा ट्तपदकं श्रवेीप का वर्ण भी वैश्य है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इसके कारण च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप दोनों की सोच भौतिकवादी सोच होगी तथा रूपये-पैसे को ज्यादा महत्व देंगे। च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप दोनों मितव्ययी होंगे तथा भविष्य के लिए धन का संचय करना पसन्द करेंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विचारों का सम्मान कर तथा आपस में विचार-विमर्श करके ही बुद्धिमत्तापूर्वक निवेश करेंगे।

वश्य

च्पलनेी का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं ट्तपदकं श्रवेीप का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। यद्यपि कि जानवर एवं मनुष्य के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद अलग-अलग होते हैं फिर भी दोनों एक-दूसरे के सान्निध्य में जीवन व्यतीत करते हैं। फलस्वरूप च्पलनेी एवं ट्तपदकं श्रवेीप दोनों प्रेम एवं सौहार्द के साथ एक-दूसरे के साथ जीवन व्यतीत कर सकेंगे। ट्तपदकं श्रवेीप अपने पति की हर आज्ञा शिरोधार्य करेगी तथा बदले में च्पलनेी अपनी पत्नी की देखभाल करेगा तथा उसे प्रेम प्रदान करेगा।

तारा

च्पलनेी की तारा अतिमित्र तथा ट्तपदकं श्रवेीप की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। च्पलनेी हमेशा ट्तपदकं श्रवेीप के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

योनि

च्पलनेी की योनि गौ है तथा ट्तपदकं श्रवेीप की योनि वानर है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या

कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में च्पलनी का राशि स्वामी टतपदकं श्रवीप के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि टतपदकं श्रवीप का राशिस्वामी च्पलनी के राशिस्वामी के साथ मित्रता का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए सम हों किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को अपना मित्र मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

च्पलनी का गण मनुष्य तथा टतपदकं श्रवीप का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में टतपदकं श्रवीप सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर च्पलनी व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण च्पलनी अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

च्पलनी से टतपदकं श्रवीप की राशि पंचम भाव में स्थित है तथा टतपदकं श्रवीप से च्पलनी की राशि नवम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। दोनों के राशि स्वामियों में परस्पर मित्र होने के कारण नवम-पंचम दोष का परिहार होने के कारण विवाह को स्वीकृति प्रदान की जा

सकती है किंतु भकूट मिलान में इसे 0 अंक/गुण प्रदान किया जायेगा। दोनों के बीच सदैव संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े होते रह सकते हैं। जिसके कारण ट्तपदकं श्रवेीप को संतानोत्पत्ति में भी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

नाड़ी

च्पलनेी की नाड़ी आद्य है तथा ट्तपदकं श्रवेीप की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान में शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ का संतुलन होता है। च्पलनेी की आद्य नाड़ी तथा ट्तपदकं श्रवेीप की अन्त्य नाड़ी अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ एवं मजबूत शरीर, दम्पत्ति के आपसी प्रेम एवं समझदारी की द्योतक हैं। जिसके कारण आपकी संतान स्वस्थ, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

च्पलनेी की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त कन्या तथा ट्तपदकं श्रवेीप की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त मकर है। अतः दोनों का पृथ्वी तत्व होने के कारण स्वभावगत समानताएं रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा फलतः मिलान उत्तम रहेगा ।

च्पलनेी की राशि का स्वामी बुध तथा ट्तपदकं श्रवेीप की राशि का स्वामी शनि दोनों परस्पर मित्र तथा सम राशि में स्थित है। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी। इसके प्रभाव से च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप का परस्पर प्रेम सहयोग तथा समर्पण का भाव होगा तथा एक दूसरे के सुख दुख में पूर्ण ध्यान रखकर अपनी सहृदयता का परिचय देंगे। साथ ही परस्पर समर्पण का भाव भी विद्यमान होगा। जिससे वैवाहिक जीवन की शुभता बनी रहेगी।

च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप की राशियां परस्पर पंचम नवम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार इसे भकूट दोष माना गया है। इसके प्रभाव से यदा कदा च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप के मध्य अनावश्यक मतभेद एवं विवाद उत्पन्न होंगे तथा अहंकार के भाव की प्रबलता के कारण संबधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। अतः यदि च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप परस्पर सामंजस्य का भाव बनाएं रखें तथा अभिमानी प्रवृतियों का त्याग करें तो जीवन सुखमय हो सकता है।

च्पलनेी का वश्य मानव एवं ट्तपदकं श्रवेीप का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में नैसर्गिक शत्रुता तथा विषमता का भाव विद्यमान रहता है। अतः च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप की अभिरूचियों में असमानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर भी आवश्यकताएं अलग अलग होगी फलतः दाम्पत्य संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप दोनों का वर्ण वैश्य है। अतः दोनों की कार्य क्षमता समान रहेगी तथा धनार्जन के प्रति रूचिशील रहेंगे। साथ ही अपने समस्त कार्यो को वणिक बुद्धि से सम्पन्न करेंगे।

धन

च्पलनेी की तारा अतिमित्र तथा ट्तपदकं श्रवेीप की तारा सम्पत है। अतः इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सर्वदा तत्पर होंगे। साथ ही भकूट का इनकी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति पर किसी भी प्रकार शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन मंगल के प्रभाव से च्पलनेी यदा कदा सामान्य हानि या व्यय से परेशानी की अनुभूति कर सकते है परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा।

ट्तपदकं श्रवेीप धनाढ्य एवं सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा उसके शुभ प्रभाव एवं अपनी योग्यता तथा परिश्रम के बल पर च्पलनेी अपने धन की वृद्धि करने में तत्पर रहेंगे। लेकिन मंगल के प्रभाव से ट्तपदकं श्रवेीप की प्रवृति अनावश्यक मात्रा में अधिक व्यय करने की होगी तथा विलासमय वस्तुओं पर व्यर्थ में ही व्यय करेंगी। अतः ट्तपदकं श्रवेीप को ऐसी प्रवृति की उपेक्षा करना ही श्रेयष्कर रहेगा।

स्वास्थ्य

च्पलनेी का जन्म आद्य तथा ट्तपदकं श्रवेीप का जन्म अन्त्य नाड़ी में हुआ है। अतः ये दोनों नाड़ी दोष से मुक्त माने जाएंगे लेकिन मंगल का च्पलनेी के स्वास्थ्य पर शुभ प्रभाव नहीं होगा। अतः इससे वे रक्त या पित संबंधी रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही गुप्त रोगों की भी संभावना होगी एवं संभोग शक्ति में कमी के कारण दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति रहेगी। अतः उपरोक्त अशुभ फलों में न्यूनता करने के लिए च्पलनेी को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार का उपवास भी करना चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से यह मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप को उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगा तथा कन्या संतति की अपेक्षा पुत्र संतति अधिक रहेगी।

प्रसव संबंधी कष्ट के लिए आप को किसी भी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। इनका प्रसव सामान्य रूप से सम्पन्न होगा तथा इससे संबधित कोई भी समस्या नहीं होगी। ट्तपदकं श्रवेीप सुदंर एवं स्वस्थ बच्चों को जन्म देंगी तथा स्वयं भी पूर्ण रूपेण स्वस्थता की अनुभूति करेंगी। इससे च्पलनेी और उसके परिवार के सभी सदस्य प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप की संततियां व्यवहारकुशल एवं माता पिता के लिए आज्ञाकारी रहेंगी तथा अपने बच्चों की प्रगति से दोनों सन्तुष्टि एवं आनंद की अनुभूति करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी वे स्वपरिश्रम योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। उनके उत्कृष्ट कार्य कलापों से च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप अपने आप को भाग्यशाली समझेंगे। इनकी संततियां कभी भी उनकी इच्छा के विपरीत कोई भी कार्य नहीं करेंगी जिससे माता पिता को उन पर गर्व रहेगा। इस प्रकार सुदंर, आज्ञाकारी एवं बुद्धिमान संतति से युक्त होकर च्पलनेी और ट्तपदकं श्रवेीप का पारिवारिक जीवन सुख शांति एवं आनंद से व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

ट्तपदकं श्रवेीप के सास के साथ संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। साथ ही आयु में पर्याप्त अन्तर होने के कारण इन के मध्य अनावश्यक मतभेद रहेंगे। लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता से व्यवहार करेंगे तो संबधों में मधुरता की वृद्धि होगी तथा तनाव में

न्यूनता आएगी।

ससुर से भी ट्तपदकं श्रवैीप को इच्छित स्नेह तथा सहानुभूति अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। अतः ट्तपदकं श्रवैीप को चाहिए कि ससुर की सेवा, सुख सुविधा तथा आराम का पूर्ण ध्यान रखें। इससे उनसे स्नेह के भाव में वृद्धि हो सकती है। लेकिन देवर तथा ननदों के साथ ट्तपदकं श्रवैीप के संबध अच्छे रहेंगे तथा परस्पर सार्थक सामंजस्य का भाव रहेगा तथा मित्रता पूर्ण व्यवहार करके उनसे स्नेह तथा सहानुभूति को प्राप्त करेंगी। इन संबधों से ट्तपदकं श्रवैीप सास ससुर से भी इच्छित स्नेह की प्राप्ति करने में समर्थ हो सकती है इस प्रकार ससुराल में इनका जीवन सामान्यतया सुखी ही रहेगा।

ससुराल-श्री

च्पलनैी के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को च्पलनैी अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी च्पलनैी के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण च्पलनैी के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।